CONSTRAINING OUR THEORY OF LANGUAGE

ANNA KINSELLA

HINDI TRANSLATION AND READING GUIDE

MATERIAL PREPARED FOR EKLAVYA, BHOPAL &NMRC, JNU BILINGUAL PROJECT

BY

INDRANI ROY

NOVEMBER 2012

कनस्ट्रेनिंग आवर थियोरी ऑफ लैंग्वेज

आना किन्सेला

Reading Guide

किन्सेला के इस लेख में भाषा और मनुष्य के विकास के तथ्यों के बारे में बात की गई है । भाषा–विज्ञान के आधारभूत प्रश्न क्या है और इन प्रश्नों के उत्तर से हम भाषा के बारे में क्या जानते हैं ये किन्सेला हमें बताती हैं।

मनुष्य जाती के विकास में किस तरह भाषा की क्षमता उत्पन्न हुई इस प्रश्न के उत्तर किस तरह के अध्ययन से हमें मिल सकते हैं इसके बारे में किन्सेला चर्चा करती हैं । भाषा विज्ञान के अलग–अलग विषयों से हम इस बारे में क्या जान सकते हैं ये बताया गया है ।

इसके आगे किन्सेला सिन्टेकटिक थियोरियों में किये गये अध्ययन के बारे में बताती हैं क्यों सिन्टैकटिक थियोरियों को जीवविज्ञान, मनोविज्ञान, समाजविज्ञान के तत्वों पर भी गौर करना पड़ता है । भाषा विज्ञान में सिन्टैक्स भाषा के अन्दरूनी संरचना का अध्ययन है । सिन्टैकटिक थियोरियाँ सिर्फ वाक्य संरचना के बारे में ही नहीं बताती, ये हमारे मस्तिष्क में मौजूद भाषा के अन्दरूनी ज्ञान के बारे में बताने का प्रयत्न करती है इसलिये सिन्टैकटिक थियोरियों को बाकी विज्ञानों से मिले तत्वों को भी मानकर चलना पड़ता है । किन्सेला इसके बाद मिनिमलिस्ट प्रोग्राम के बारे में बात करती हैं जो अब तक की सबसे कुशल सिन्टैकटिक थियोरी है ।

इसके आगे किन्सेला मिनिमलिस्ट प्रोग्राम के पृष्ठभूमी के बारे में बताती है और ज्ञान अर्जन के बारे में दो भिन्न सोच – *नेटिविज़म* और *एम्पिरिसिज़म* के इतिहास हमारे सामने रखती हैं । ये दो सोच कैसे हमें भाषा अर्जन को समझने में मदद कर सकते हैं ये हम देख पाते हैं । मिनिमलिस्ट प्रोग्राम को क्यों नेटिविस्ट माना जायेगा ये हमें बताया जाता है ।

किन्सेला इसके आगे जेनरेटिव ग्रामर के बारे में बात करती हैं जो की नेटिविज़म से प्रेरित है । इस तरह के ग्रामर

की खासियत के बारे में बताया गया है । किस प्रकार के व्याकरण को जेनरेटिव का दर्जा दिया जाता है और मिनिमलिस्ट प्रोग्राम को जेनेरटिव किन कारणों से मानेंगे ये बताया जाता है ।

इसके आगे के भाग में किन्सेला सिन्टेकटिक थियोरी से मिले भाषाई क्षमताकी चर्चा करतीं है । वे ये बताती है कि सिन्टेक्स के थियोरियों से हमें भाषा के बारे में क्या जानने को मिला है । जेनेरेटिव थियोरियाँ और खासकर मिनिमलिस्ट प्रोग्राम थियोरी भाषा के बारे में ही नहीं बल्की मनुष्य के मस्तिष्क के बारे में भी बात करते हैं । मिनिमलिस्ट प्रोग्राम के अन्तर्गत दिये गये मनुष्य के भाषाई ज्ञान के चित्र से मनुष्य के विकास के बारे में और कई प्रश्न उठ खड़े होते हैं जिनके उत्तर जानने के लिये हमें मनुष्य के विकास के बारे में जानना पड़ता है ।

आगे के भाग में किन्सेला जीवों के विकास (evolution)के बारे में बताती हैं ।

*****

कनस्ट्रेनिंग आवर थियोरी ऑफ लैंग्वेज

आना किन्सेला

भाषा और विकास (evolution)

भाषा मनुष्य जाती की विशेष क्षमता है । इसलिये भाषा–विज्ञान के क्षेत्र का आधारभूत प्रश्न है कि भाषा की क्षमता सिर्फ मनुष्य जाती के पास ही क्यों है? इस प्रश्न का हल ढूंढने की कोशिश में जो प्रश्न उभर कर आते हैं वे हैं 1) बच्चे कैसे भाषा के कम अनुभव के बावजूद बहुत ही थोड़े समय में बिना किसी कठीनाई के भाषा सीख जाते हैं ? 2) भाषा की ऐसी कौनसी विशेषतायें है जो दुनिया की हर भाषा में पाई जाती है ? 3) भाषा के इस्तेमाल के लिये किस तरह के ज्ञान की आवश्यकता है ? 4) मनुष्य का दिमाग भाषा का किस तरह संचालन करता है?

पहले प्रश्न में ये पूछा गया है कि भाषा सीखने की प्रक्रिया में कोई बच्चा अपने साथ पहले से क्या लेके आता है? क्या उसके पास पहले से भाषाई ज्ञान होना ज़रूरी है? क्या ये ज्ञान अन्दरूनी है ? दूसरा प्रश्न भाषा की

सार्वभौमिकता को लेकर है कि दुनिया के विभिन्न भाषाओं में जो समानतायें मिलती है वो क्या है? और ऐसा क्यों है कि भाषाओं के कुछ लक्षण सार्वभौमिक है और कुछ नहीं? तीसरा प्रश्न वयस्क मनुष्य के दिमाग के अन्दरूनी स्थिति को लेकर है कि एक मनुष्य को भाषा के बारे में क्या ज्ञान होना चाहिये ताकि वो सफलतापूर्वक बातचीत कर सके? चौथा प्रश्न मनुष्य के दिमाग के बारे में है कि क्या भाषा के लिये दिमाग के कुछ खास हिस्से ज़िम्मेदार हैं? इन हिस्सों में भाषा की प्रक्रिया कैसे चलती है? मनुष्य के दिमाग में क्या अलग है और क्या इसकी वजह से हम भाषा से समृद्ध है? क्या भाषा हमारे सोचने कि तरीके को बदल सकती है?

ये सारे प्रश्न एक दूसरे से जुड़े हुये हैं । भाषा के सार्वभौमिक नियम शायद इसलिये है ताकि भाषा सीखने में आसान हो । ये भाषा के सार्वभौमिक नियम उस भाषाई ज्ञान के आधार बनते हैं जो भाषा बोलने के लिये मनुष्य के लिये ज़रूरी हो । मनुष्य का दिमाग किस तरह भाषा का संचालन करता है इस बात से हमें ये पता पड़ता है कि किस तरह भाषा का ज्ञान दूसरे ज्ञान से अलग है और कितना भाषाई ज्ञान अन्तर्निहित है ? भाषा के अन्तर्निहित ज्ञान के बारे में जानने से हम मनुष्य जाती और दूसरे प्राणियों के दिमाग के फर्क के बारे में जान सकते हैं । भाषा बोलने के लिये मनुष्य को भाषा के बारे में और खासकर अपनी भाषा के बारे में क्या जानना ज़रूरी है ये बात जानने से हम ये बता सकते हैं कि बच्चों में भाषा का कितना ज्ञान पहले से मौजूद है ?

आजकल एक और प्रश्न भाषा के बारे में प्रचलित है ? वो ये कि मनुष्य जाती के विकास में ऐसा क्या हुआ कि हमें भाषा की क्षमता मिली? इस प्रश्न का संबंध – आनुवंशिक विज्ञाण (genetics), जीवाश्म विज्ञान (palaeontology) और पुरातत्व विज्ञान (archaeology) से है । समस्या ये है कि आनुवंशिक विज्ञान के क्षेत्र में बहुत विकास हुआ है पर भाषा के प्रायोगिक आँकड़े कम है । जीवाश्म विज्ञान और पुरातत्व विज्ञान की स्थिति और भी संगीन है क्योंकि भाषा के जीवावेश नहीं होते और जहाँ शरीर के जीवावेश मिलते हैं वहाँ मनुष्य के स्वर तंत्र के जीवावेश से कुछ खास पता नहीं पड़ता ।

इसलिये मनुष्य के विकास के प्रश्न के उत्तर के लिये हम 1 से 4 दिये हुये मुद्दों के द्वारा मिले उत्तरों को ही देखते हैं । भाषा–विज्ञान के क्षेत्र के अलग–अलग विभागों से मनुष्य के विकास के पहेली के कुछ उत्तर मिल सकते हैं। तांत्रिकाभाषाविज्ञान (neurolinguistics) से स्नायु संबंधी तत्व मिल सकते है जिससे मनुष्य के मस्तिष्क की विशेषतायें जानने में मदद मिलती है । मनोभाषाविज्ञान (psycholinguistics) से हमें मनुष्य के भाषा के व्यवहार का ज्ञान मिल सकता है जिससे ये पता चल सकता है कि विकास के किस दबाव के कारण मनुष्यों को बोलने की ज़रूरत पड़ी। स्वर विज्ञान (phonetics, phonology), आकृतिविज्ञान (morphology)

वाक्य संरचना (syntax) , शब्दार्थ विज्ञान (semantics) के सार्वभौमिक नियम के अध्ययन से हमें भाषा की संभावनाओं के बारे में तत्व मिलते हैं । इन संभावनाओं के फैलाव से ये देखा जा सकता है कि मनुष्य के विकास के साथ इस तरह के फैलाव का क्या संबंध है । विकासात्मक भाषाविज्ञान (Developmental Linguistics) और पिड्जिन (pidgins) एवं क्रियोल (creoles) से मिले तत्वों से हमें भाषा के प्रारम्भिक रूप के बारे में मालूम पड़ता है । इस तरह विभिन्न विषयों से मिले ज्ञान से हमें भाषाविज्ञान के सिद्धांतों को सशक्त बनाने में मदद मिल सकती है ।

सिन्टैकटिक थियोरी में किये गये अध्ययन

भाषा की प्रक्रिया को हम सामाजिक, सांस्कृतिक या मनोवैज्ञानिक नज़रिये से देख सकते हैं । इसके अलावा भाषा को हम संरचना की दृष्टि से भी देख सकते हैं । सिन्टैकटिक थियोरी भाषा के आंतरिक संरचना के पहलूओं का अध्ययन है । पर सिन्टैकटिक थियोरी को परिपूर्ण बनाने के लिये ये ज़रूरी हो गया है कि ये न सिर्फ भाषा के आंतरिक संरचनाओं को समझा पाये बल्कि इसके अलावा दूसरे विषयों (जैसे जीवविज्ञान, मनोविज्ञान या समाजविज्ञान) से मिले तत्वों को भी समझा पाये । दूसरे शब्दों मे किसी सिन्टैकटिक थियोरी के लिये इन प्रश्नों का उत्तर देना ज़रूरी है कि क्या ये थियोरी भाषा–अर्जन को समझा सकता है? क्या ये भाषा को समझने की प्रक्रिया को समझा सकता है? क्या इस थियोरी से भाषा के विकास की कहानी स्पष्ट होती है? क्या ये भाषा के व्यवहार के बारे में समझा सकता है ?

मिनिमलिस्ट प्रोग्राम सिन्टैक्स की थियोरी है जो ऊपर दिये हुये प्रश्नों का हल दे पाती है । इस थियोरी को समझने के लिये हमें इसकी पृष्ठभूमी को जानना पड़ेगा ।

नेटिविज़म बनाम एम्पिरिसिज़म (Nativism versus Empiricism)

बच्चे के पास भाषा का क्या ज्ञान होता है ? नेटिविज़म के अनुसार बच्चा भाषा का अन्दरूनी ज्ञान लेके पैदा होता है । एम्पिरिसिज़म के अनुसार बच्चा पहले से कुछ नहीं जानता है वो आस–पास के परिवेश से ही सब कुछ सीखता है ।

भाषाविज्ञान में नेटिविज़म का आगाम नोअम चॉमस्की ने 1960 में किया । इस सोच का आधार प्लेटो के *मेनो* पुस्तक के फलसफे में है । प्लेटो इस पुस्तक में ये कहते हैं सीखने की प्रक्रिया को कैसे समझा जाये? क्योंकि मनुष्य बहुत कम अनुभव से काफी कुछ सीख जाते हैं इसलिये प्लेटो कहते हैं की सीखना हमारे पिछले जनम

के ज्ञान को फिर से याद करना है । यानी कि हमें सब कुछ पहले से मालूम है और इसलिये हम इतनी जल्दी सब कुछ सीख पाते हैं। भाषाविज्ञान में इस सोच को इस प्रकार देखा गया है कि हमारे पास पहले से कुछ ज्ञान सार्वभौमिक व्याकरण के रूप में है और इसी के सहारे हमारे भाषा सीखने की प्रक्रिया सरल हो जाती है । इसी के कारण हम भाषा के बहुत कम अनुभव से भी भाषा का पूरा–पूरा ज्ञान बना पाते हैं ।

नेटिविज़म के विपरीत एम्पिरिसिज़म की सोच है । इस सोच का आगाम जॉन लॉक ने 1689 में किया । लॉक के अनुसार बच्चे के दिमाग में पहले से कुछ नहीं होता है, उसका दिमाग सीखने की काबिलियत रखता है और इसके कारण वह विभिन्न कार्य खासकर भाषा सीखने का कार्य कर पाता है । एम्पीरिसिज़म के कट्टर समर्थकों का ये मानना है कि बच्चों का दिमाग एक खाली स्लेट की तरह है (tabula rasa) जिसपर अनुभवों से लिखा जाता है । 2005 में जेफ्री सेम्पसन ने कहा कि अगर हमारे दिमाग में सब कुछ पहले से ही मौजूद है जिसे सिर्फ उजागर करने की ज़रूरत है तो वहाँ सृजनशीलता की जगह कहाँ रहती है? जबकी इतिहास दिखाता है कि मनुष्य सृजनशील होते हैं इसलिये सेम्पसन पूरी तरह से नेटिविज़म का विरोध करते हैं ।

नेटिविज़म और एम्पिरिसिज़म दोनों सोचो के ही कट्टर पक्षों में समस्या है । एक पक्ष ये कहता है कि हम जीवन भर के लिये ज़रूरी ज्ञान को लेकर पैदा होते है और दूसरा ये कि हमारे दिमाग में कुछ नहीं होता है । इन दोनों सोचों के सबसे सख्त पक्षों को न लेकर हम ये कह सकते हैं कि हमारे पास कुछ ज्ञान पहले से मौजूद है, सार्वभौमिक व्याकरण से हमें कुछ चीज़ें मिलती हैं पर इसके बाद हमें अपने अनुभवों से ज्ञान मिलता है । हम भाषा सीखकर नहीं आते पर भाषा सीखने की प्रक्रिया के साधन हमारे पास पहले से मौजूद हैं ।

मिनिमलिस्ट प्रोग्राम एक सख्त नेटिविस्ट थियोरी है क्योंकि इसमें भाषाई क्षमता को genetic माना जाता है, और इसमें सार्वभौमिक व्याकरण को स्थान दिया जाता है । पर मिनिमलिस्ट प्रोग्राम इससे पहले आये हुये नेटिविस्ट थियोरियों से अलग है क्योंकि इसमें अन्दरूनी ज्ञान की मात्रा पहले के थियोरियों के वनस्पत कम माना गया है । मिनिमलिस्ट प्रोग्राम में कल्पना किया गया भाषा तंत्र और थियोरियों से छोटा और किफायती है ।

<u>जेनेरेटिव ग्रामर क्या है ?</u>

जेनेरटिव ग्रामर की शुरुआत 1950 में हुई । चॉमस्की के दो लेखों (1957, 1975 ब) से इस सोच का आरम्भ हुआ । जेनेरटिव ग्रामर का ये मानना है कि भाषा में वाक्यों की उत्पत्ती व्याकरणिक नियमों से होते है । इन नियमों के आधार पर हम अनगिनत वाक्य बना सकते हैं । इसके कारण ही हमारी भाषा सृजनशील होती है ।

जेनेरेटिव ग्रामर में वाक्य संरचना सर्वोपरी है । जेनेरेटिव ग्रामर नेटिविज़म को मानती है क्योंकि इस ग्रामर में माना जाता है कि नवजात शिशु व्याकरण का ढांचा लेकर पैदा होता है ।

मिनिमलिस्ट प्रोग्राम जेनेरेटिव थियोरी इसलिये है क्योंकि 1) इसमें वाक्य संरचना (syntax) को सर्वोपरी माना जाता है 2) इसमें ये माना जाता है कि वाक्यों की रचना व्याकरण के नियमों से होती है 3) इसमें ये माना जाता है कि भाषाई तंत्र अन्तर्जात है ।

भाषा की क्षमता के बारे में हमें सिन्टैक्टिक थियोरी क्या बताती है ?

अब सवाल ये है कि सिन्टैकटिक थियोरी और खासकर मिनिमलिस्ट प्रोग्राम से भाषाई क्षमता के बारे में हम क्या जान पाये हैं ?

भाषा को संकेत और अर्थ के बीच का संबंध समझा जाता है । सिन्टैकटिक थियोरी हमें ये बातती है कि भाषा का व्याकरण, संकेत और अर्थ के बीच मध्यस्तता करता है । मिनिमलिस्ट प्रोग्राम में इससे भी बढ़कर ये कहा गया है कि ये संकेत और अर्थ के बीच का संबंध सिन्टैक्स अथवा व्याकरण के कारण ही तैयार होता है । ये थियोरी ये भी बताती है कि भाषाई क्षमता ऐसी होनी चाहिये जिसमें अनगिनत वाक्य बनाने की काबिलियत हो । इसके ऊपर मिनिमलिस्ट प्रोग्राम थियोरी हमें ये बताती है कि ये वाक्य उत्पादन की क्षमता हमारे gene में पाई जाती है और हमारे दिमाग में जन्म से उपस्थित है । इसलिये ये थियोरी E-language यानी की भाषा के बाहरी रूप (अथवा performance) के बजाय हमें हमारे I-Language यानी भाषा का ज्ञान जो की मस्तिष्क में है (अथवा competence) को समझने के लिये प्ररित करती है । मिनिमलिस्ट प्रोग्राम ये भी कहती है कि भाषा अर्जन के लिये आनुवंशिक भाषाई तंत्र का होना आवश्यक है ।

भाषाई क्षमता का ये दृष्टिकोण evolutionary linguists के लिये कई प्रश्न पैदा करता है । संकेत और अर्थ के बीच संबंध की प्रक्रिया क्यों शुरू हुई? भाषाई क्षमता अन्तर्जात कैसे हुई? मानव जाती के विकास में ऐसा क्या हुआ कि न सिर्फ भाषाई क्षमता का उद्भव हुआ बल्कि इस क्षमता के लिये genetic तंत्र भी तैयार हुई ? ये जटिल भाषा व्यवस्था का दिमाग में सरल निरूपण कैसे हुआ?

विकास (evolution) का अध्ययन

विकास के थियोरी के अनुसार विकास होने के लिये जनसंख्या में genetic भिन्नता की ज़रूरत है। किसी भी

जनसंख्या में कुछ genes सब में पाये जाते हैं । पर विकास के लिये कुछ genes का अलग होना ज़रूरी है । ये भिन्नता genes के विभिन्न रसायनों से पैदा होती है । genes एक वंश से दूसरे वंश में दोहराये जाते हैं । अलैंगिक जीवों में उनके गुणसूत्र (chromosome -- genes को वहन करने वाला तत्व) उनके शावकों को उसी रूप में मिलते हैं । अन्य जीवों में मा-बाप के गुणसूत्र मिलकर बच्चे में genetic विभिन्नता पैदा करते हैं । gene mutation से भी लैंगिक और अलैंगिक जीवों में विभिन्नता पैदा हो सकती है । genes कॉपी होने मे गलतियाँ हो सकती है, अथवा बाह्य पर्यावरण genes पर असर डाल सकते हैं । इन दोनों कारणों से ही genes के DNA क्रम में बदलाव आ सकता है जिससे जीवों में जैविक नवीनता (biological innovation) पैदा हो सकती है। जीवों में विभिन्नता के चलते दो प्रक्रियायें हैं जिनसे ये स्थिर होता है कि कौन जीवित रहकर प्रजनन करेगा । एक प्रक्रिया है चुनाव का । जो सबसे दुरूस्त होगा वही जीवित रहेगा, वही ऐसे वंशज पैदा करेगा जो खुद जीवित रह सके और उसी के तरह के वंशज पैदा कर सके । इन वंशजों के gene अपने पूर्वजों से मिलते हुये होंगे । धीरे धीरे ये gene बड़ी संख्या में पाई जाने लगेगी क्योंकि इस gene के धारकों की संख्या चुनाव के प्रक्रिया के कारण ज़्यादा होगी । इस प्रक्रिया को natural selection कहा जाता है । इसके अलावा sexual selection होता है जहाँ चुनाव शारिरिक आकर्षकता के बिला पर होता है ।

दूसरी प्रक्रिया drift है । जब माता-पिता के कम बच्चे होते हैं तो कुछ genes छूट जाते हैं । gene drift की प्रक्रिया से भी जीवों में कुछ gene ज़्यादा पाये जाने लगते हैं । अतः चुनाव (selection) और drift दोनों प्रक्रियायें जीवों में विभिन्नतायें कम करती है। इस तरह अनेक selection और drift के प्रक्रिया से नस्लों में बदलाव आता है ।

*****